संतान निर्माण

प्रवचनकर्ता

स्वामी विवेकानन्द जी परिव्राजक

सम्पादक

डॉ. राधावल्लभ चौधरी

प्रकाशक

दर्शन योग महाविद्यालय
आर्यवन, रोजड़, पत्रा. सागपुर, ता. तलोद,
जि. साबरकांठा (गुजरात) 383307
दूरभाष : (02770) 287418, 287518
चलभाष : 94094 15011, 94094 15017
Email : darshanyog@gamil.com
• **Website :** www.darshanyog.org

पुस्तक : संतान निर्माण
उपदेशक : स्वामी विवेकानन्द जी परिव्राजक
प्रकाशन तिथि : मार्गशीर्ष 2069
सृष्टि संवत् 1960853113
दिसम्बर 2012
संस्करण : प्रथम
मूल्य : 4 रुपये

प्रकाशक :
दर्शन योग महाविद्यालय
आर्यवन, रोजड़, पत्रा. सागपुर, ता. तलोद,
जि. साबरकांठा (गुजरात) 383307

Ph. : 94094 15011, 94094 15017
Email : darshanyog@gamil.com
Website : www.darshanyog.org
Youtube : darshanyog2009
Facebook / Orkut / Skype : darshanyog

मुद्रक :

प्रवचनकर्ता की ओर से स्पष्टीकरण

इस पुस्तक में मुझसे ध्यान–योग शिविरों में श्रोताओं द्वारा संतानों के निर्माण के संबंध में पूछी गयी शंकाओं के समाधान हैं। जब व्यक्ति सामने बैठा हो तो कुछ उसके स्तर की भाषा बोलनी पड़ती है। जब उसे पुस्तक रूप दिया जाता है, तो कुछ अलग स्थिति होती है। इसलिए बोलने और लिखने में अंतर आ जाता है। उनको छापते समय भी हमने भाषा में कहीं कुछ थोड़ा बहुत अंतर किया है, जो कि विषय को समझने की दृष्टि से आवश्यक था। वैसे तो मैं हिन्दी ही बोलने की प्रेरणा देता हूँ। परन्तु जिन लोगों में मैं काम करता हूँ, वे लोग शुद्ध हिंदी समझते नहीं हैं। इसलिए मैं भी इसी खिचड़ी भाषा का प्रयोग अधिक करता हूँ। यह शंका–समाधान का कार्यक्रम क्योंकि सामान्य लोगों में हुआ था, इसलिए इसकी भाषा भी वही खिचड़ी है। संपादक श्री (डॉ). राधावल्लभ चौधरी के द्वारा भी विषय को और अधिक सरल तथा जनसामान्य की समझ के अनुरूप बनाने के लिए पुस्तक की भाषा में और प्रस्तुतिकरण में थोड़ा बदलाव किया है।

आशा है, बुद्धिमान लोग इन समाधानों से लाभ उठाएँगे।

आपका शुभचिंतक

स्वामी विवेकानंद परिव्राजक

मेरे अपने भाव

बच्चों को सहारे और सीखने के लिए माता–पिता और गुरू की आवश्यकता होती हैं। उनके कोमल हृदय में प्रेम और गुस्सा, इन दोनों का ही गहरा असर होता है। दण्ड के भय से जब वे मर्यादा में रहते हैं, तो उद्दण्ड होने से बच जाते हैं और दुष्टता के बनिस्पत सज्जनता की ओर उन्मुख होते हैं। वे ही फिर विद्वान बनकर बड़े काम करते हैं।

चूँकि बच्चों को संवार कर ही परिवार, समाज और राष्ट्र को संवारा जा सकता है, इसी भावना से पूज्य स्वामी विवेकानंद जी द्वारा इस विषयक दिए गए प्रवचनों का पृथक से इस लघु पुस्तिका के माध्यम से प्रकाशन किया जा रहा है।

दिनांक 2 अक्टूबर, 2012

संपादक
डॉ राधावल्लभ चौधरी,
ट्युलिप– 20, सुखसागर वैली,
ग्वारीघाट, जबलपुर (म.प्र) मो. 09424306170
E-mail: cdrradhavallabh@yahoo.in

ओ३म्

संतान निर्माण

. . . .

(1) पन्द्रह साल का लड़का यदि दुष्ट व्यसन में पड़ जाये तो उसे कैसे सुधारा जा सकता है?

 उत्तर –

सुधार और बिगाड़ का समय

. . . .

सुधार और बिगाड़ का जो समय है, वह पन्द्रह साल के बाद नहीं है। दरअसल, उससे पहले है। अब तो घोड़ा हाथ से छूट गया। पन्द्रह साल का हो गया बेटा। अब तो गया हाथ से। इसका भी उत्तर आगे बतायेंगे।

सावधानी शुरू से होती है

. . . .

 जिनके बच्चे अभी पन्द्रह साल से छोटे हैं, वो लोग पहले ध्यान से जानें। अगर आप अपने बच्चों को अनुशासन में रखना चाहते हैं,

उनको बुराईयों से, व्यसनों से बचाना चाहते हैं, अच्छी बात सिखाना चाहते हैं, अच्छा इंसान बनाना चाहते हैं, तो शुरु से ही सावधान हो जाएं।

तैयारी जन्म से भी पहले से की जाती है

विवाह–संस्कार के बाद पहला संस्कार होता है– 'गर्भाधान संस्कार।' वहाँ से बच्चे के जीवन को बनाने की तैयारी शुरू होती है। बल्कि उससे भी पहले से होती है।

शास्त्र का नियम तो यह है कि– पहले माता–पिता योजना बनाते हैं, कि हमको कैसी संतान चाहिये। उनके लिए मानसिक–संकल्प करते हैं। वो वैसी मानसिक तैयारी करते हैं। वैसी पुस्तकें पढ़ते हैं। वैसा खान–पान रखते हैं। इतनी तैयारी करके फिर वो 'गर्भाधान–संस्कार' करते हैं तो उसी तरह की 'आत्मा' ईश्वर भेजता है। वहाँ से शुरूआत हो सकती है। लेकिन लोगों को

पता नहीं है। अब कोई व्यक्ति गृहस्थ आश्रम के नियम जानते ही नहीं तो पालन क्या करेंगे?

गृहस्थ आश्रम का मुख्य उद्‌देश्य संतानोत्पत्ति

दरअसल, गृहस्थ आश्रम उत्तम संतान बनाने के लिये ही निर्धारित किया गया है, मौज–मस्ती के लिये नहीं। आज जितने लोग गृहस्थ में जाते हैं, शादी करते हैं, उनसे आप पूछो– आप शादी क्यों कर रहे हैं? उनके पास कोई उत्तर नहीं है। सारी दुनिया करती है, इसलिये हम भी कर रहे हैं, यह उनका जवाब है। हमारे माता–पिता का दबाव (प्रेशर) है। शादी करो, इसलिये कर रहे हैं। यह उत्तर है, उनके पास। गृहस्थ का उद्देश्य पता नहीं है।

बच्चों के निर्माण का एक विज्ञान है

क्यों शादी करनी चाहिये, संतान कैसी बनानी चाहिये, संतान कैसे बनाई जाती है, कुछ

पता नहीं। इसीलिये वो बच्चों को बिगाड़–बिगाड़ के रख देते हैं। सीखा ही नहीं, कि बच्चों को कैसे बनाया जाता है। यह बहुत बड़ा विज्ञान (साइंस) है।

मकान बनाते हैं। उसके लिये कितनी मेहनत करते हैं। सिविल इंजीनियरिंग करते हैं। मकान बनाना सीखते हैं। और कितने सालों तक मेहनत करते हैं, तब जाके मकान ठीक से बनता है। यह तो जड़ वस्तु है। जड़ वस्तु को बनाने, सीखने के लिये कितनी मेहनत करते हैं। कितने सालों तक योजना बनाते हैं। कितनी प्रैक्टिस करते हैं, अभ्यास करते हैं। और एक बच्चे को अच्छा इन्सान बनाना है तो वो तो चेतन वस्तु है, वो तो मकान बनाने से हजार गुना कठिन है। और इंसान को अच्छा कैसे बनाया जाये, यह सीखते नहीं। किसी को पता नहीं। और इसीलिये बच्चों को बिगाड़ के रख देते हैं। और जब बच्चे बिगड़ जाते हैं तो फिर हमारे पास ले आते हैं– महाराज जी यह बच्चा बिगड़ गया, इसको सुधारो। बिगाड़ो आप, सुधारें हम।

तो पहले आप बच्चों को बनाना सीख लो। बच्चे कैसे बनाये जाते हैं। इसके कैसे नियम होते हैं। कैसे पालन करना चाहिये।

पहले से योजना बनाओ

गर्भाधान–संस्कार से पहले तैयारी करो। हमको कैसा बच्चा चाहिये। हम उसको क्या बनाना चाहते हैं, पहले से योजना बनाओ। वैसी तैयारी करो, वैसी पुस्तकें पढ़ो। वैसा स्वाध्याय करो। ऐसे लोगों के साथ बैठो। ऐसा चिंतन करो। ऐसा खान–पान रखो। फिर आत्मा को बुलाओ। फिर ईश्वर आपके पास अच्छी आत्मा भेजेगा। और फिर उसको वैसे ही संस्कार देना। वैसा ही सोचना। वैसी ही बात सुनाना, वैसे ही लोरियाँ सुनाना। वैसी ही बातें सिखाना। फिर जब डेढ़–दो साल का बच्चा हो जाये, तब से वो समझने लगता है। फिर उसके सामने अच्छी–अच्छी बातें करना। उसको अच्छी–अच्छी चीज सिखाना।

शिष्टाचार से वार्तालाप सिखाना। सभ्यता से उठना–बैठना सिखाना। लेन–देन सिखाना। और उसको धीरे – धीरे सब बातें समझाते जाना।

अपने व्यवहार को शु(रखें

मेरे पास आते हैं लोग, कहते हैं साहब! मेरे बच्चे रात को बारह बजे, एक बजे तक जागते हैं। मैंने पूछा, अच्छा आप कितने बजे तक जागते हैं। वे बोले, साहब मैं भी एक बजे सोता हूँ। मैंने कहा, जब आप एक बजे सोते हैं तो बच्चे दस बजे क्यों सोयेंगे? आप क्यों एक बजे तक जागते हो। आप भी दस बजे सोओ न, फिर देखो बच्चे क्यों नहीं सोयेंगे। तो पहले माता–पिता को अपने सुधार की जरूरत है, फिर बच्चे सुधरेंगे। मैंने कुछ मूल–मूल सिद्धांत बतलाये, कि बच्चे का बिगाड़ और सुधार कैसे होता है। उस पर विशेष ध्यान दें। और जो बात आप अपने बच्चे को सिखाना चाहते हैं पहले खुद अपने जीवन

में आचरण करें। जिस दोष से बच्चे को बचाना चाहते हैं, पहले स्वयं उस दोष को छोड़ें, स्वयं अच्छे कामों को करें। फिर आपका बच्चा अच्छे काम करेगा।

बच्चे माता पिता के आचरण से सीखते हैं

 दस में से आठ बातें बच्चे आपके आचरण से सीखते हैं। आप जो करते हैं, बच्चे आपकी नकल करते हैं। दो बात केवल आपके उपदेश से सीखेंगे। बेटा यह अच्छी चीज है यह करो, ये खराब चीज है यह मत करो। बाकी तो आपके प्रैक्टिकल–जीवन में से सीखते हैं। आप सच बोलेंगे, तो आपके बच्चे सच बोलेंगे। आप झूठ बोलेंगे, तो आपके बच्चे झूठ बोलेंगे। तो बच्चे बिगड़ते हैं, उसके लिए सबसे बड़े दोषी उनके माता–पिता हैं।

माता पिता की बुराइयां बच्चे आसानी से अपना लेते हैं

बहुत मातायें देखी गई हैं। जो बच्चों के सामने झूठ बोलती हैं। पिता भी कम नहीं हैं। वो भी बच्चे से झूठ बोलते हैं। और जब बच्चा सीख लेता है तो फिर कहते हैं– यह बच्चा कैसे बिगड़ गया। यह कहाँ से सीख आया झूठ बोलना। हमने तो नहीं सिखाया। अच्छा जी, आपने ही तो सिखाया था। आपको पता भी नहीं चला, कि आपने इसको झूठ बोलना कब सिखा दिया। कैसे सिखा दिया। कल्पना करो एक माता रसोई में काम करती हैं, वहाँ रसोई में चाकू रखा था। दो साल के बच्चे ने चाकू उठा लिया। बच्चा, तो अपनी मनमर्जी करता है। जैसा मन में आता है, वैसा ही करता है। माँ ने देखा, तो कहा बेटा, चाकू छोड़ दो। उसने चाकू नहीं छोड़ा, तो माँ ने उससे चाकू छीन लिया। और छीन करके पीठ के पीछे छुपा लिया। और कहा, वो कौआ ले गया। बोलो ऐसा करते हो या नहीं करते? करते हैं। आप समझते हो, यह बच्चा तो दो साल का है,

यह नहीं समझेगा। हम तो इसको उल्लू बना लेंगे, इसको मूर्ख बना लेंगे। आपका यह सोचना गलत है। वो सब समझता है। हाँ बोल नहीं सकता। अभी वो बता नहीं सकता कि आपने झूठ बोला है। लेकिन वो समझ गया। वो देखता है, कि कौआ तो आया नहीं। ये कहते हैं, कौआ ले गया। पीठ के पीछे छुपाया और बोले कौआ ले गया। फिर उसने दूसरी चीज उठा ली, तो आपने फिर छीन ली, और पीठ के पीछे छिपाकर कहा, वो बंदर ले गया। उसने देखा, कि मेरी माँ झूठ बोलती हैं। कभी कहती है, कौआ ले गया, और कभी कहती है, बंदर ले गया। न कौआ आया, न बंदर। झूठ बोलती है। माँ से बच्चे ने झूठ बोलना सीख लिया।

 और दो महीने बाद क्या हुआ। बच्चे ने माचिस उठा ली। माँ बोली– नहीं–नहीं माचिस मत उठाओ। यह मुझे दे दो। अब वही बच्चा माचिस अपनी पीठ के पीछे छिपाकर

जवाब देगा, माँ माचिस तो कौआ ले गया। मैंने ऐसा भी देखा है। माँ को बोलते देखा है। और फिर उसी माँ के बच्चे को झूठ बोलते भी देखा है। अपनी आँख से देखा है। अब आपको समझ में आया, कि आपने अनजाने में क्या पढ़ा दिया। तो ऐसे नहीं पढ़ाना। आप खुद ही उनको बिगाड़ते हैं। खुद झूठ बोलते हैं। और फिर कहते हैं साहब! बच्चा बिगड़ गया। उसका दोषी और कोई नहीं है। आप हैं। तो ऐसी गलतियाँ न करें।

उसको चाकू नहीं देना। सच बोल करके उससे चाकू ले लेना। झूठ बोलकर नहीं। चाकू उससे छीन लो। और कहो तुमको चाकू नहीं मिलेगा। चाकू हमारे पास है। हम नहीं देंगे। चाकू उठाके ऊपर रख दो। जहाँ उसका हाथ नहीं पहुँचे। उसको प्रेम या गुस्से से डराते हुए समझायें तुम्हारा हाथ कट जायेगा, इसीलिये चाकू बिल्कुल नहीं मिलेगा। सच बोल करके उसको ब्रेक लगाओ। ब्लेड उठा लिया, ब्लेड छीन लो। तुम्हारा

हाथ कट जायेगा। ब्लेड ऊँचा रख दो। ब्लेड नहीं मिलेगा। माचिस उठा ली। माचिस छीन लो, ऊपर रख दो। नहीं मिलेगी। ऐसे बच्चों को सच बोल करके सिखाओ। ये मातायें झूठ बोलती हैं, तो बच्चे झूठ पकड़ते हैं।

और पिता लोग भी कम नहीं हैं। बच्चा हो गया पाँच–छह साल का। एक बार क्या हुआ, एक व्यापारी आया पैसा लेने। तो पिताजी ने दरवाजे में से देखा कि अरे! ये तो पैसे लेने आया है, और पैसे तो हैं नहीं। तो पिताजी ने बच्चे से कहा उसको जाकर के बोलो, पिताजी घर पर नहीं है। बच्चा बेचारा छोटा था। उसने जैसा सुना, वैसा बोल दिया। पिताजी कह रहे हैं, पिताजी घर पर नहीं हैं। तो वो व्यापारी जो आया था पैसे लेने के लिये, वो भी समझ गया पिताजी घर पर हैं या नहीं हैं।

बाद में उस बच्चे ने सोचा, कि पिताजी तो घर में हैं। पिताजी घर में नहीं हैं,

यह तो झूठ है। अब पिताजी ने तो उसको झूठ बोलना सिखा दिया। फलस्वरूप दो–तीन साल के अंदर वो बच्चा पिताजी को धोखा देने लग गया। दो–चार साल का और बड़ा हो गया। दस ग्यारह फिर और बड़ा– चौदह–पन्द्रह साल का हो गया। स्कूल जाता है। दोस्तों के साथ इधर–उधर घूमता रहता है। होमवर्क करता नहीं है, कभी गार्डन में टाइम बर्बाद करता है तो कभी पिक्चर देखने चला जाता है। और शाम को घर आ जाता है फिर कहता है, मैं तो स्कूल गया था। मैं कहीं गार्डन में नहीं गया था। मैं कहीं पिक्चर देखने नहीं गया था। मैं तो स्कूल गया था। अब बोलो, किसने उसको झूठ बोलना सिखाया? उत्तर है माता–पिता ने। तो अगर आप ऐसी गलतियाँ करेंगे तो आपके बच्चे बिगड़ेंगे। इसलिए कृपया ऐसी गलतियाँ न करें। जो भी बच्चे को सिखाना है सच–सच सिखाओ। हमेशा सच बोलो।

बच्चों के निर्माण में गुरू तीसरा कारण है

और तीसरा दोषी है, स्कूल का टीचर। आजकल टीचर अपना कर्तव्य छोड़ चुके हैं। केवल सिलेबस पढ़ा देने मात्र से अध्यापक की जिम्मेदारी पूरी नहीं हो जाती। उसको चाल–चलन, व्यवहार, बोलना, सभ्यता और मॉरल–एजूकेशन भी देना चाहिये। यह भी टीचर की बड़ी जिम्मेदारी है। पहले के टीचर लोग ऐसा करते थे। लेकिन अब छोड़ दिया। इसलिये दुनिया बिगड़ गई।

बच्चों के बिगाड़ के बहुत सारे कारण हैं। और भी कई कारण हैं। मैंने अभी केवल तीन मुख्य कारण बतलाये। तीन बड़े कारण हैं। एक माता, दूसरा पिता और तीसरा गुरू, (आचार्य, शिक्षक, टीचर स्कूल का)। अगर ये तीनों अच्छे हैं तो बच्चे अच्छे बनेंगे। अगर ये तीनों खराब हैं, तो बच्चे खराब बनेंगे। जिनके बच्चे अभी

छोटे हैं, वो अभी से सावधान हो जायें। ऐसा कोई व्यवहार न करें, जिससे बच्चे का बिगाड़ हो।

पन्द्रह वर्ष के बच्चे को व्यसन की हानियाँ और व्यसन छोड़ने से होने वाले लाभ बताएं

पन्द्रह साल का लड़का हो गया, अब छोटा नहीं है, बड़ा हो गया। उसको जिस दुर्व्यसन से बचाना चाहते हैं, उस व्यसन की हानियाँ, नुकसान बतलायें। हानियों की सूची (लिस्ट) बनायें। उसमें लिख–लिखकर बतायें, कि यह आपने जो दुर्व्यसन पकड़ लिया है। ऐसा करने से ये हानियाँ होंगी। और उस दुर्व्यसन से बचकर ठीक काम करेंगे, तो उससे क्या लाभ होंगे? लाभ की दूसरी लिस्ट बनायें।

बच्चे से हानि–लाभ की सूची याद करने को कहें

और उससे कहें बेटा, ये जो सूचियाँ हैं, इनको हर रोज तीन बार, चार बार, पाँच बार पढ़ना है। और कुछ नहीं करना, बस सूची को

पढ़ना है। जैसे डॉक्टर लोग तीन बार दवा खिलाते हैं ना, सुबह, दोपहर, शाम। वैसे ही यह तुम्हारी दवा है। तुमको तीन बार यह दवा खानी है। अर्थात् तीन बार यह सूचियाँ पढ़नी हैं। चार बार पढ़ो, पाँच बार पढ़ो, कोई नुकसान नहीं है। इसमें कोई ओवर डोज (अति) नहीं होती है। पाँच बार पढ़ेंगे जल्दी लाभ होगा। तीन बार पढ़ेंगे, तो कुछ देर लगेगी। उसको हानि और लाभ समझायें। उसकी बुद्धि जागने लग जाएगी। बुद्धि जाग्रत होने लग गयी, बुद्धि विकसित होने लग गई। और अब शरीर भी बड़ा हो रहा है। साल दो साल में अच्छी ताकत आ जायेगी।

समझायें, मगर प्रेम से

जब बेटा–बेटी पन्द्रह साल के हो जायें, या उससे ऊपर सोलह–अठारह के हो जायें, तब उनको प्रेम से समझायें। बुद्धि में डालें, कि यह जो तुम गलती करते हो, इससे क्या–क्या

नुकसान हैं। और ऐसा नहीं करोगे, ठीक काम करोगे तो क्या–क्या फायदे हैं। यह उनको समझायें, बार–बार बतायें।

जोर जबरदस्ती न करें

 और फिर उनके ऊपर छोड़ दें, कि तुम्हें अपना भविष्य अच्छा बनाना हो, तो ऐसा काम करो। और ये काम करोगे तो भविष्य खराब होगा। अब तुम जानो। हमने समझा दिया, हमारी ड्यूटी खत्म। यह पन्द्रह साल की उम्र वाले और उससे बड़ी उम्र वाले बच्चों के साथ व्यवहार होना चाहिये।

 और अगर बच्चे छोटे हैं, छोटे बच्चों का भी समझ लीजिये, कैसा होना चाहिये। छोटे बच्चे पाँच साल से कम उम्र वाले, दो साल, तीन साल, चार साल, छोटी उम्र के बच्चे नादान होते हैं। उन्हे बहुत सी बातें बुरी होते हुए भी अच्छी लगती हैं। उनको भी आप प्रेम से बतलायें, बेटा ऐसा करो। ऐसा मत करो।

प्रेम से नहीं मानें, तो हल्की डाँट लगाएं

 दो बार, पाँच बार, प्रेम से बतलाओ, नहीं मानते, थोड़ी–थोड़ी हल्की डाँट लगा सकते हैं। पर पाँच साल से कम उम्र वाले बच्चों की पिटाई नहीं करना। पीटना नहीं। पाँच साल से कम उम्र के बच्चों की आप यदि पिटाई करेंगे, तो वे जिद्दी हो जायेंगे। अड़ियल हो जायेंगे, हठी हो जायेंगे।

अच्छे काम का ईनाम दें

 प्रेम से काम चलाओ, उनको कुछ खाने–पीने की चीज दो, कोई मिठाई दो, कोई फल दो। कोई और खाने की अच्छी चीज दो। कोई खिलौना दो और अपना काम चलाओ। जो काम करवाना है, वो काम करवाओ। उनको खिलाओ–पिलाओ और काम करवाओ।

बच्चों की गलत बात न मानें

 वही काम कराना है, जो आप चाहते

हैं। हम बड़े हैं, हमें पता है कि क्या ठीक है, क्या गलत है। बच्चे छोटे हैं, उनको पता नहीं। वो तो अपनी मनमानी करेंगे। पर उनकी मनमानी बात नहीं माननी है। जो घर के बड़े लोग हैं, समझदार हैं, वो अपनी मनमानी करवायेंगे। जो उनको ठीक लगता है, वो करवायेंगे। प्यार से, डाँट से, खिला करके, कोई प्रलोभन दे के, कोई ईनाम देकर, जैसे भी।

कभी–कभी ईनाम भी दिया, नहीं मानता। प्यार से समझाया, नहीं मानता। थोड़ी डाँट भी लगायी, नहीं मानता। छोटे–बच्चों के लिये बहुत बढ़िया उपाय निम्नलिखित है–

बोलना बंद कर छोटे बच्चों से अपनी बात मनवाएं

जब ये उपाय काम नहीं करें, तो एक अंतिम उपाय है। छोटे बच्चों से बात करना बंद

कर दें, बोलना बंद। उनसे कहो, बेटा यह काम करो। वो कहता है, हम नहीं करेंगे। तो बोलो– ठीक है, हम तुमसे बात नहीं करेंगे। ऐसे मुँह घुमाके बैठो। हम बात नहीं करेंगे। छोटे–बच्चे यह नहीं सहन कर सकते। पाँच साल से कम उम्र के बच्चे जब आपकी बात नहीं मानें, तो बोलो– तुम हमारी नहीं मानते, जाओ हम भी तुम्हारी नहीं मानते। हम बात नहीं करेंगे। ऐसे घूम के बैठ जाओ। दो मिनट में दिमाग ठीक हो जायेगा। फटाफट कहेंगे– हाँ–हाँ, आप जो कहोगे, हम करेंगे। वो सीधे हो जायेंगे।

---

2. पाँच से तेरह साल तक की उम्र के बच्चों के साथ कैसा व्यवहार करें?

 उत्तर –

 आप जो भी काम करवाना चाहते हैं, उसके बारे में, उससे होने वाले लाभ के बारे में

उनको समझायें। प्यार से कहें– बेटा यह काम करो।

 कई तो चुपचाप मान लेंगे। कई अड़ियल होंगे, नहीं मानेंगे। तो दो बार, चार बार प्रेम से बतायें, नहीं मानते, फिर डाँट लगाओ, जबरदस्ती करवाओ। चलो करो, करना पड़ेगा। चलो जल्दी करो, फटाफट जल्दी करो। उनको ऐसे थोड़ा जबरदस्ती करवाओ।

 फिर कोई उससे भी नहीं मानेगा तो फिर उसको थप्पड़ लगाओ, कैसे नहीं करेगा। दो थप्पड़ लगेंगे। जल्दी काम करेगा। और थप्पड़ से भी बात नहीं बनी, तो खाना बंद। तुम हमारी बात नहीं मानोगे, शाम को खाना नहीं मिलेगा। खाना बंद कर दो। कैसे नहीं करेगा। बिलकुल करेगा। उसके खिलौने बंद कर दो। 'तुम हमारी बात नहीं मानोगे, हम तुम्हारी बात नहीं मानेंगे। तुमको अच्छे खिलौने लाकर नहीं देंगे।' ऐसे–ऐसे उन पर प्रतिबंध लगाओ। जो करवाना है, जो आपको

ठीक लगता है, वो काम बच्चों से करवाओ। जो ठीक नहीं लगता, वो नहीं करवाना।

बच्चों की एक भी गलत बात नहीं मानें

 बच्चे चाहे जो भी करें। जो भी मानें, कहें, उनकी गलत बात बिल्कुल नहीं सुननी। हाँ, जो उनकी उचित बात है, वो तो मानेंगे। अगर वो अनुचित बात कहते हैं, गलत बात कहते हैं, नहीं मानेंगे। रोते हैं, तो रोने दो। कोई चिंता नहीं। वो ही करवाना, जो आप चाहते हैं।

 अगर आपने बच्चों की उल्टी–सुल्टी मनमानी बातें स्वीकार करनी शुरू कर दी, फिर वो थोड़े दिनों में अच्छी तरह बिगड़ जायेंगे। फिर वो आपकी नहीं सुनेंगे। और अपनी सब मनमानी पूरी करवायेंगे।

 फिर आप कहेंगे, देखो साहब! ये कैसे बच्चे हो गये हमारे। हमने इनके ऊपर मेहनत की, इतना समय खर्च किया, इतने पैसे खर्च किये,

दिन–रात पसीना बहाया और आज ये बड़े हो गये, हमारी बात ही नहीं सुनते। अरे! आपने स्वयं बिगाड़े। आपका दोष है। आपने बच्चों का संचालन करना सीखा नहीं। उनकी गलत बातें मानते रहे तो वो अपनी ही मनवायेंगे। आपकी बात नहीं सुनेंगे।

घर–गृहस्थी वाले लोग, सिद्धांत याद कर लें। ''बच्चों की गलत बात एक भी नहीं मानेंगे। सही बात सब मानेंगे।'' बस, और मान लो कई–कई अड़ियल बच्चे होते हैं, बड़े ढीठ होते हैं, हठी होते हैं, इतना सब करने के बाद भी वे नहीं मानते। मान लो दस साल का बच्चा है। आपने कहा बेटा, यह काम करो– वो कहता है, मैं नहीं करूँगा। अब उसके लिये फाइनल (अंतिम) हथियार है, उसको धमकी दो। यह घर हमारा है। तुमको इस घर में रहना है या नहीं रहना है? वो कहेगा– हाँ रहना है। रहना है, तो जो हम कहेंगे, वो करो। तुम नहीं करोगे, तो भाग जाओ यहाँ से।

वो दरवाजा खुला है, भाग जाओ यहाँ से। हम नहीं रखते अपने घर में, निकल जाओ। उसको धमकी लगा दो, दस साल का बच्चा है, ग्यारह साल का है, बारह साल का है। आपकी धमकी सुनकर डर जायेगा। सीधा हो जायेगा। हाँ, एकाध होता है जो सचमुच भाग जाता है। इसीलिये मैंने बारह साल उम्र बताई है। बारह साल से कम उम्र का बच्चा घर छोड़ के नहीं भागेगा।

 यहाँ एक श्रोता ने कहा– हम तो बच्चे को समझाते और डाँटते हैं । परन्तु उसकी दादी बीच में आ जाती है। वह नहीं मानती। तब मैंने कहा– दादी नहीं मानती, दादी को अलग बैठाओ। उसको समझाओ। खराबी बच्चे में नहीं है। खराबी बच्चे की दादी में है। जो नहीं मानती, जो उसको बिगाड़ रही है।

 बच्चे को धमकी दो, यह घर हमारा है। तुमको इस घर में रहना है। तो जो हम कहेंगे वो करना पड़ेगा। और नहीं तो भाग जाओ यहाँ

से। 'अब दस–बारह साल का बच्चा छोटा है। उसको पता है, मैं अकेला नहीं जी सकता। अभी मेरे पास इतनी बुद्धि सामर्थ्य नहीं है, ताकत नहीं है, मैं अकेला नहीं जी सकता। अभी मुझे माता–पिता की जरूरत है। तो वो आपकी धमकी सुन करके, सीधा हो जायेगा। वो कहेगा–नहीं–नहीं मुझे यहाँ रहना है। तो बोलो, 'जो हम कहेंगे वो करोगे।' तो यह धमकी चलेगी, थप्पड़ चलेगा, मार–पीट चलेगी। डाँट–धमकी चलेगी, कब तक ? बारह–तेरह साल की उम्र तक।

□ उसके बाद अब चौदह का हो गया, पन्द्रह का हो गया, सोलह–अठारह का हो गया, अब धमकी नहीं देना। अब तो वो भाग जायेगा। तेरह के बाद धमकी नहीं लगाना। बेटा–बेटी बड़े हो जायें, फिर धमकी नहीं लगाना, कि यह हमारा घर है, भाग जा यहाँ से।' फिर तो भाग जायेगा।

□ फिर वही जो पहले बताया था। फिर वो करना। अब उसको बुद्धि से समझाओ। 'बेटा!

अब तुम बड़े हो गये, तुम समझदार हो गये, जवान हो गये। तुम्हारे पास ताकत भी आ गई। अक्ल भी आ गई। अब अपनी अक्ल से सोचो। सुझाव देना हमारा काम है। क्या करना है, क्या नहीं करना है, वो तुम जानो।' उसके सर पर भार डालो। तो वो थोड़ा सावधान होकर सोचेगा।' अच्छा, अगर मैं ऐसा करूँगा, तो मेरा भविष्य बिगड़ेगा। और ऐसा करूँगा तो ठीक हो जायेगा। तो अब मुझे देखना है, अपना भविष्य ठीक करना है, कि बिगाड़ना है। बस वो हानि और लाभ वाली लिस्ट पढ़वाओ, और वो स्वयं पढ़ करके, उसको समझ जायेगा, क्या करना चाहिये और क्या नहीं करना चाहिये।

 अगर आपने बारह–तेरह–चौदह–पन्द्रह साल तक बच्चे को बचपन से पूरी ट्रेनिंग ठीक–ठीक दी है। यह सही है, यह गलत है, यह करना है, यह नहीं करना है, इसमें लाभ है, इसमें हानि है। तो आगे फिर उसके निर्णय ठीक चलेंगे।

और पहले ही पन्द्रह साल तक आपने उसको अच्छा प्रशिक्षण (ट्रेनिंग) नहीं दिया, सही गलत नहीं समझाया, हानि–लाभ नहीं बताया, उचित–अनुचित का पालन नहीं करवाया, तो आगे फिर उसके निर्णय वैसे ही उलट–पुलट होंगे। फिर आपको नुकसान होगा। तो इस तरह से बच्चों का नियंत्रण करें।

बच्चे के बिगड़ने का कारण उनकी गलत बात मानना

 मान लीजिये छह वर्ष का एक छोटा बच्चा है। उसको एक दिन सर्दी, जुकाम हो गया, हल्का बुखार आ गया । और बाहर गली में आइसक्रीम बेचने वाला आया। उसने आवाज लगाई, आइसक्रीम–आइसक्रीम। बच्चे ने सुन लिया, कि बाहर आइसक्रीम बेचने वाला आया है, तो बच्चे का मन करता ही है। वो अपनी माँ से कहेगा– मम्मी, मम्मी, मुझे आइसक्रीम दिलाओ, आइसक्रीम खानी है।

माँ को पता है, कि आज इसकी तबियत ठीक नहीं है, इसको सर्दी–जुकाम है, बुखार है, आज तो आइसक्रीम नहीं खानी चाहिये, नही तो और अधिक रोगी हो जायेगा। इसलिए माँ ने मना कर दिया। बेटा आज आइसक्रीम नहीं मिलेगी, तुम्हारी तबियत ठीक नहीं है। तीन दिन में ठीक हो जाओगे, फिर खिलायेंगे।

    अब यह बात बच्चे की समझ में थोड़े ही आती है, कि 'आज मेरी तबियत ठीक नहीं है। मुझे नहीं खानी चाहिये।' वो तो छोटा बच्चा है। उसका मन पर इतना नियंत्रण (कंट्रोल) नहीं है। वो तो कहता है, नहीं, मैं तो अभी आइसक्रीम खाऊँगा।' वो नहीं समझता है, कि आज आइसक्रीम से नुकसान होगा। वो फिर दोबारा रट लगाता है, कि 'नहीं–नहीं, मुझे तो आइसक्रीम खिलाओ।' अब उसको खिलायेंगे, तो रोगी पड़ेगा। इसीलिये माँ ने दोबारा मना कर दिया, कि 'नहीं बेटा, आज नहीं मिलेगी। तीसरी बार फिर माँगी।

माँ ने फिर मना कर दिया। बच्चा रोने लगा, 'मुझे तो आइसक्रीम चाहिये।' जमकर रोना शुरू कर दिया।

 इतने में आई बच्चे की चाची। उसने पूछा, बेटा क्यों रोते हो। बच्चे ने कहा– 'यह मम्मी बहुत खराब है।' अच्छा क्यों क्या हुआ?' मुझे आइसक्रीम नहीं खिलाती।' अच्छा, मम्मी आइसक्रीम नहीं खिलाती। अच्छा चल, तू मेरे साथ चल। मैं तुझे आइसक्रीम खिलाती हूँ। वो चाची आकर के ले जायेगी और उसको बाहर जाकर के आइसक्रीम खिला देगी। समझ लेना, आपका बच्चा बिगड़ेगा। आपके हाथ में नहीं रहेगा। यह गलती की चाची ने। चाची को पहले पूछना चाहिये था, कि तुम्हारी माँ ने तुमको आइसक्रीम क्यों नहीं खिलाई। बिना पूछे ऐसे ही आकर मम्मी के ऊपर आरोप लगा दिया, 'तुम्हारी मम्मी बहुत खराब है, बच्चों का इतना भी ध्यान नहीं रखती। बच्चे रोते रहते हैं और

उनको आइसक्रीम नहीं खिलातीं। अरे! आइसक्रीम ही तो है न, दो–चार–पाँच रुपये की आइसक्रीम होती है। पैसे किसलिए कमाते हैं। ये किस दिन काम आयेंगे।' ऐसे उसने डाँट–फाँट शुरू कर दी। बच्चे की माँ से यह नहीं पूछा कि 'तुमने बच्चे को आइसक्रीम क्यों नहीं खिलाई। बस यहाँ चाची मार खा गई। उसे पहले आकर पूछना चाहिये था, कि 'आपने इस बच्चे को आइसक्रीम क्यों नहीं खिलाई।' तो माँ बताती, कि 'आज इसको सर्दी है, जुकाम है, बुखार है, इसीलिये आइसक्रीम नहीं खिलायी।' पहले जानकारी करो। फिर चाहे, चाची खिलाये, चाहे दादी खिलाये, चाहे दादा खिलाये, चाहे चाचा। कोई भी आये, चाहे बच्चों का पिता जी आये। पहले वो माँ से पूछेगा, कि इसको आइसक्रीम क्यों नहीं खिलाई, और माँ बतायेगीं, सर्दी है, बुखार है, इसलिये नहीं खिलाई।' सारी जानकारी करके अब बच्चे को सभी बड़े लोग एक ही जवाब दो– 'बेटा तुम्हारी मम्मी बहुत

अच्छी है। बहुत समझदार है। उसने आइसक्रीम नहीं खिलाई, बहुत अच्छा किया। आज तुम्हारी तबियत ठीक नहीं है। आज तुमको आइसक्रीम नहीं मिलेगी।' तो माँ ने भी मना किया, चाची ने भी मना किया। चाचा आया, तो उसने भी मना किया। अब बताइये बच्चा कहाँ जायेगा? उसको चुपचाप मन मारके रहना पड़ेगा।

अगर आप इतना कर सकते हैं, तो समझ लो आपके बच्चे अच्छे बनेंगे, आपके नियंत्रण में रहेंगे। आपके अनुशासन में चलेंगे। अगर आप इतनी मेहनत नहीं कर सकते, जानकारी नहीं करते और खामखाँ बिना परीक्षण किये ऐसे दोष लगाते हैं चाची के ऊपर, माँ के ऊपर, पिता के ऊपर, तो समझ लेना बच्चे बिगड़ेंगे। माँ ने कह दिया, 'बेटा परीक्षा आ रही है सर पे, बैठ के थोड़ी देर पढ़ लो। अचानक आए पिताजी। उन्होंने कुछ जानकारी की नहीं। और आते ही उसका विरोध कर दिया।' क्या तुम

सारा दिन बच्चे को पढ़ते ही रहने दोगी। कभी खेलने की छुट्टी भी तो दिया करो। पढ़–पढ़के पागल हो जायेंगे। जाओ बेटा, जाओ खेलो।' पिताजी ने कह दिया जाओ खेलो। माँ कह रही है, बेटा पढ़ो। बच्चा किसकी बात सुनेगा? पिताजी की। क्योंकि उसको तो खेलना अच्छा लगता है। वो माँ की नहीं सुनेगा। और फिर माँ चिल्लायेगी– 'देखो मेरा बेटा मेरी बात नहीं सुनता।' आगे जाकर ऐसे ही बच्चे अधर्मी, अपराधी बनते हैं।

बच्चों के लिए नियम बनाओ

इस झंझट से बचने के लिये, अपने घर में विधान–सभा लगाओ। जैसे सब राज्यों (स्टेट) की अपनी–अपनी विधानसभा होती है। और जितने मंत्री लोग होते हैं, वहाँ सब बैठ के बहस करते हैं, चर्चा करते हैं। समस्याओं को सुलझाते हैं, और सारे मिल करके एक कानून पास करते हैं। और फिर उस कानून को जनता

पर लागू करते हैं। तब सरकार चलती है, तब शासन चलता है। जो घर के बड़े लोग हैं, माता–पिता, चाचा–चाची, दादा–दादी, ये सब घर के राजा लोग हैं। और बच्चे आपकी प्रजा हैं। अगर आपको प्रजा पर ठीक शासन करना है, तो घर के जितने बड़े लोग हैं, बैठ करके अपने घर में विधानसभा लगाओ। और बच्चों के लिये कानून पास करो। 'इन बच्चों को क्या खिलाना, कब खिलाना, क्या नहीं खिलाना, कितना खिलाना, कैसे खिलाना, कब सुलाना, कब जगाना, कब स्कूल भेजना, कब खेलना, कब कूदना, कब टी.व्ही, देखना?' यानि पूरा चौबीस घंटे का टाइम–टेबिल बनाओ।

- माँ कहती है, बच्चा दस बजे सो जायेगा। पिताजी कहते हैं, नहीं बारह बजे तक पढ़ेगा। गलत बात है। ऐंसा बच्चा आपके हाथ में नहीं रहेगा।

- पहले माता–पिता दोनों एक विचार

तो बना लो। आपका खुद का एक विचार नहीं है। बच्चा किसकी सुनेगा! उसके मन में जो आयेगा, वो उसकी बात सुनेगा। आपकी बात नहीं सुनेगा। अगर माता–पिता में आपस में मतभेद हैं तो पहले बैठकर के अपने घर की विधानसभा में बहस कर लो। दस बजे सोना ठीक है या बारह बजे। दोनों पहले एक निर्णय कर लो। और फिर वो जो एक निर्णय स्वीकार हो जाये, फाइनल हो जाये। फिर उसको बच्चे पर लागू करो, दो अलग–अलग बात नहीं। एक मंत्री ने कहा कि जमीन के ऊपर तीस प्रतिशत टैक्स लगेगा। दूसरे मंत्री ने कहा नहीं–नहीं पच्चीस प्रतिशत टैक्स लगेगा। बोलो जनता किसकी बात सुनेगी? पच्चीस वाले की। तीस वाले की क्यों सुनेगी। फिर तीस वाला मंत्री चिल्लायेगा, 'देखो साहब, यह जनता कैसी है, मेरी बात ही नहीं सुनती।' आपकी बात तब सुनेगी, जब आप दोनों मंत्री एक बात बोलेंगे। तो बच्चे आपकी जनता हैं, आपकी प्रजा हैं। उनके शासक

हैं, राजा हैं, माता–पिता, चाचा–चाची, दादा–दादी। आपको जो भी बच्चों को सिखाना है। उसका कानून बनाओ। और फिर सबके सब वो कानून बच्चों पर लागू करो। देखो आपके बच्चे कैसे नहीं बनते। हम गारंटी देते हैं, खूब बनेंगे। और आपने पालन नहीं किया, तो फिर वो खूब बिगड़ेंगे। और बिगाड़–बिगाड़ के हमारे पास ले आओगे। महाराज जी ये बच्चा बिगड़ गया है, अब आप सुधारो।' बिगाड़ो आप, सुधारें हम। आपकी भी तो कुछ जिम्मेदारी है। आप भी तो कुछ मेहनत करो। हम तो करते ही हैं, आगे भी करेंगे।

बच्चों की दिनचर्या तय करें

 24 घण्टे का टाइम टेबिल बनाओ। रात के दस बजे सोना है, और सुबह पाँच बजे उठ जाना है। इसके बाद कोई नहीं सोयेगा। आज संडे है, तो आठ बजे तक सोयेंगे। और स्कूल

जाना है तो पाँच बजे उठेंगे। यह क्या मतलब हुआ भाई, सन्डे को तो स्कूल जाना नहीं, तो क्यों सोओ आठ बजे तक? क्या सन्डे को रोटी नहीं खाते? जब संडे को रोटी खाते हैं, तो आठ बजे तक क्यों सोयेंगे? ऐसे माता–पिता ने बिगाड़ रखा है बच्चों को। तो पहले माता–पिता को सुधरने की जरूरत है। पहले वो अपना कानून ठीक करें।

सुबह जल्दी उठना इसलिए नहीं होता, कि हमको स्कूल जाना है। दरअसल, अपने स्वास्थ्य की रक्षा के लिये उठना है। स्कूल जाना, नहीं जाना, वो अलग विषय है। सबने सीख रखा है– ''अरली टू बैड, अरली टू राईज, मेक्स अ मैन, हेल्दी–वेल्दी एंड वाईज''। यह सबको पता है। लेकिन प्रैक्टिकल उल्टा है– ''लेट टू बेड, लेट टू राईज, मेक्स अ मैन, अनहैल्दी, अनवैल्दी अनवाईज।'' रिजल्ट भी उल्टा ही आयेगा। अनहैल्दी (रोगी) पड़ेंगे। देखो पूरा देश रोगी हो गया, कश्मीर से कन्याकुमारी

तक पूरा देश रोगी है। तभी तो जाते हैं स्वामी रामदेव जी के पास, सुबह–सुबह वो व्यायाम करवाते हैं न। आजकल काफी लोग पाँच बजे टेलीविजन के सामने बैठ जाते हैं। थोड़ा एक्सरसाईज करें, तो ठीक हो जायेंगे।

जल्दी उठने से स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। दूसरा परिणाम = अनवैल्दी यानि पैसे नहीं कमा सकता। और अनवाईज यानि बुद्धि भी जायेगी। शरीर रोगी हो जायेगा, बुद्धि भी जायेगी, तो फिर पैसा क्या कमायेंगे। तीनों जायेंगे। और आज तीनों बिगड़े हुये हैं। इसीलिये जल्दी सोयें, जल्दी उठें। जल्दी सोने का मतलब, दस बजे सोना। साढ़े नौ दस बजे तक सो जाओ। यह मेडिकल साइंस कह रहा है, मैं नहीं कह रहा हूँ। यह सब शास्त्रों का संदेश है। नौ, साढ़े नौ, दस बजे सो जाइये। जल्दी उठने का मतलब सुबह चार बजे, साढ़े चार, पाँच बजे तक उठ जाना । बस, पाँच के बाद नहीं। फिर देखो आपका

स्वास्थ्य अच्छा रहेगा।

- जो बच्चे रात को देर तक पढ़ते हैं। रात को दस से लेकर बारह, एक, दो बजे तक पढ़ते हैं। क्या रात को पढ़ने से दिन अट्ठाइस घंटे का हो जाता है। दिन के घंटे तो चौबीस ही रहते हैं। आप दिन में पढ़ो, चाहे रात में, घंटे तो उतने ही रहने हैं। तो रात को क्यों पढ़ते हो, सुबह उठ के पढ़ो न।

- पुराने समय में लोग जल्दी सोते थे, जल्दी उठते थे। सुबह–सुबह पढ़ते थे, उससे बहुत अच्छा याद होता था। सात घंटा आप नींद ले चुके हैं, तो आपका माइंड फ्रेश हो जायेगा। सुबह तरोताजा दिमाग के साथ पढ़ाई अच्छी होती है। अच्छा याद रहेगा। स्मृति अच्छी बनेंगी। और देर तक रात को जागेंगे, पढ़ाई अच्छी नहीं होगी, स्मृति अच्छी नहीं होगी। दिन–भर के थके हुए दिमाग से आप रात को पढ़ेंगे, तो पढ़ाई अच्छी नहीं होती। सुबह अच्छी होती है।

- माता–पिता को अपने बच्चों की 24 घंटे की जानकारी होनी चाहिए, कि आपका बच्चा कब कहाँ जाता है, और क्या करता है, किसके साथ बैठता है, क्या खाता है, क्या देखता है, किससे बात करता है, क्या बात करता है, इत्यादि।

- माता–पिता इस बात का विशेष ध्यान रखें, कि आपका बच्चा गंदी फिल्में न देखे, गंदे गीत, नाच गाना टेलीविजन न देखे; उसे टेलीविजन के कार्यक्रम निश्चित करके देवें, कि वह टेलीविजन में कब और क्या देखेगा। वह कार्टून, Discovery, National Geographic, Animal Planet, Cid और समाचार तक देख सकता है।

- इसके अतिरिक्त बच्चे की दैनिक दिनचर्या में प्रतिदिन गायत्री मंत्र का पाठ अर्थ सहित सुबह और शाम को, और दिन में एक बार हवन भी अवश्य शामिल होना चाहिए। चाहे

बच्चा सुबह हवन करके स्कूल जाये, अथवा शाम को घर आकर हवन करे, वह एक दिन में एक बार अवश्य हवन करे। इससे उसके संस्कार उत्तम बनेंगे. यदि आपके घर में हवन हर रोज होता है, परन्तु आपके बच्चे उसमें नहीं बैठते, तो इतना काफी नहीं है। आपके बच्चे उस दैनिक हवन में जरुर बैठने चाहियें. तभी वे अच्छे बनेंगे, अन्यथा नहीं।

 इस तरह से अपना टाइम–टेबिल बनायें। बच्चों का चौबीस घंटे का समय–चक्र कागज पर लिखें। उनके कमरे में चिपका दें दीवार पर। कहें, यह तुम्हारा टाइम–टेबिल है, अब इसके हिसाब से चलना है। और जो पालन नहीं करेगा, उसको दंड मिलेगा।

दंड के बिना कोई सुधरता नहीं है।

 यह बिलकुल सही नियम है। धरती पर बुद्धिमान लोगों ने प्रैक्टिकल करके, इसके

बड़े अच्छे रिजल्ट देखे हैं। ये सिर्फ किताबी बातें नहीं हैं। आप दंड लागू करो। बच्चे फटाफट ठीक हो जायेंगे। माता–पिता दंड देना नहीं चाहते। वो डरते हैं। सोचते हैं कि बच्चे बीमार हो जायेंगे, दुःखी हो जायेंगे। ये भूखे रहेंगे तो कैसे गाड़ी चलेगी। आप दो बार, चार बार, दंड देकर तो देखो। फटाफट सीधे हो जायेंगे। अब मैं आपको अपने घर की बात सुना रहा हूँ। जब मैं छोटा बच्चा था। हमारे घर में ये सारे नियम चलते थे, जो मैंने अब तक आपको सुनाये। दस बजे सोना, सुबह पाँच बजे उठना। हम बचपन से ये काम करते रहे। हमको माता–पिता ने बचपन से सिखा दिया। दस बजे लाइट ऑफ हो जायेगी, कोई नहीं जगेगा। हमारे माता–पिता भी दस बजे सो जाते थे। यदि वो बारह बजे तक जागते होते, तब हम भी बारह बजे तक जागते होते।

तो पहले आपको सुधरने की जरूरत है। पहले माता–पिता सुधरेंगे, तो बच्चे

सुधरेंगे। गृहस्थ–आश्रम मौज–मस्ती के लिये नहीं है, तपस्या के लिये है। बच्चे ऐसे ही नहीं बनते। बहुत तप करना पड़ता है। हमारे माता–पिता ने यह तप किया। वो खुद सुबह चार बजे उठते थे। और हमको पाँच बजे उठाते थे। और पाँच बजे कैसे उठाते थे? पिताजी एक बार आवाज लगाते थे– ''हाँ बेटा, पाँच बज गये उठ जाओ।'' अब दूसरी आवाज नहीं लगेगी। तुम्हारी मर्जी है, सोते रहो या उठो। और आज मैं देखता हूँ, आधे घंटे तक माता–पिता चिल्लाते रहते हैं, 'बेटा उठो, उठो न।' उठ रहा हूँ। यहाँ से उठके, वहाँ सो जायेगा। 'बेटा स्कूल का टाइम हो रहा है, जल्दी उठो, नहाना भी है, स्कूल भी जाना है।'' उठता हूँ, उठता हूँ, फिर यहाँ से उठेगा, वहाँ सो जायेगा। आधा–पौना घंटा तो उठाने में चला जाता है। इतना तो सीख लो कम से कम, यह आधे घंटे तक बच्चों को उठाना छोड़ दो। बिल्कुल नहीं उठाना। एक आवाज लगाना बस, बेटा पाँच बज

गये उठ जाओ। न उठे, छोड़ दो, उसको सोने दो, लेट होगा न स्कूल जाने में। एक दिन स्कूल लेट जायेगा, वहाँ होगी पिटाई। फलस्वरूप दूसरे दिन से ठीक हो जायेगा।

मैं कह रहा हूँ, 'दंड के बिना कोई सुधरता नहीं।' हमारे घर में सुबह छह बजे नहा–धोकर तैयार होके हवन में आना होता था। छह बजे जो हवन में नहीं आता था, उसे नाश्ता नहीं मिलता था, यानि नो ब्रेकफास्ट। भूखे जाओ स्कूल, नहीं मिलेगा नाश्ता। आपमें हिम्मत है, अपने बच्चे को बोल सकते हो, बेटा छह बजे नहा धोकर तैयार हो जाओ और हवन करना है, बिना हवन के नाश्ता नहीं मिलेगा। है हिम्मत? नहीं है। इसीलिये आपके बच्चे नहीं बनते। इतनी हिम्मत जगाओ, घर आपका है। आप घर के मालिक हैं, क्यों खिलाते हो बच्चे को रोटी। जब वो आपकी बात नहीं सुनता। रोटी कब खिलाओ, जब वो आपकी बात मानेगा। आजकल गड़बड़ मम्मी में

है, और पापा में है। दोनों में गड़बड़ है। पहले वो सुधरने चाहिये। फिर शाम को हम खेलकूद के आये तो भूख लगी है। माता जी को बोला, 'माता जी, भोजन चाहिये, तो माताजी कहती थीं– सन्ध या की या नहीं । हम कहते–नहीं की । तो वे कहतीं –भाग जाओ यहाँ से, खाना नहीं मिलेगा, पहले सन्ध्या करो, फिर खाना मिलेगा।'

है इतनी हिम्मत आपके अंदर, जो अपने बच्चों को ऐसा बोल सकें। अगर इतनी हिम्मत नहीं है तो भूल जाओ। आपके बच्चे नहीं सुधरने वाले। अगर सुधारना चाहते हैं, तो इतनी हिम्मत बनाओ। सुबह हवन के बिना नाश्ता नहीं मिलेगा, पाँच बजे सुबह उठना पड़ेगा, रात को दस बजे सोना पड़ेगा। चौबीस घंटे का टाइम–टेबल हमारे पिताजी ने बनाया, हमारे कमरे में चिपका दिया दीवार पर। और कह दिया, इसका पालन करना है। मेरे घर में रहना है तो यह करना पड़ेगा। नहीं तो दरवाजा खुला है, भाग जाओ यहाँ से। ये सब

प्रैक्टिकल बातें हैं। हमारे घर में हो चुकी है। तब जाकर हम कुछ ज्ञानार्जन करके आपके सामने बैठकर बोल रहे हैं। इसके पीछे बहुत लंबी तपस्या है। माता–पिता की भी और कुछ हमारी भी। गुरूजनों की, परमात्मा की बहुत कृपा है। इस तरह से बच्चों का निर्माण होता है। आप लोग भी अपने बच्चों के निर्माण के लिये इस प्रकार से प्रयत्न करें ।